प्रकाशक की ओर से

अमेरिका के ज़्यादातर लोगों, यहां तक कि शहरों और बड़े कस्बों में जन्मे और पले-बढ़े लोगों, को भी ग्रामीण अमेरिका आकर्षित करता है। अमेरिका की छवि के रूप में यह राष्ट्रीय मानस में गहरी जगह बनाए हुए है, उन लोगों के मानस में भी जो कभी सीमांत क्षेत्र या कृषि जीवन के हिस्से नहीं रहे। अठारहवीं शताब्दी के शुरू में अमेरिकी साहित्य और दर्शन में चरवाहा आदर्श प्रमुख तत्व के रूप में मौजूद थे। अमेरिका के महाद्वीपीय आकार लेने के साथ सीमांत या ग्रामीण जीवन स्वतंत्र, आत्मनिर्भर नए अमेरिकी की पहचान के साथ जोरदार तरीके से जुड़ा। 1890 के दशक में अमेरिकी सीमांत क्षेत्र के बंद होने के लंबे समय बाद और 20वीं सदी में शहरीकरण के बढ़ने के बाद अमेरिकियों को प्रकृति के करीब और ज़्यादा पारंपरिक मूल्यों वाले कम जटिल और धीमी रफ़्तार वाले जीवन की याद आती है।

अमेरिकी हृदय प्रदेश की यह दृष्टि आज भी जीवंत है। शहरी क्षेत्रों में न रहने वाले बहुत से लोग अभी भी अपना जीवन जी रहे हैं और ऐसे समय जब नई प्रौद्योगिकियों ने कहीं से भी काम करने और संचार संपर्क बनाए रखने की सुविधा दे दी है, वे समकालीन ग्राम्य जीवन को नए सिरे से परिभाषित कर रहे हैं।

स्पैन के आवरण पैकेज के आलेखों में पीटर आइज़नहावर का आलेख ''ग्रामीण ज़िंदगी के सुर'' मुश्किलों और कुंठाओं के बावजूद सादा शैली के ग्राम्य जीवन में गर्व की अनुभूति की संगीत के जरिये अभिव्यक्ति पर रोशनी डालता है। हम आपको स्पैन की वेबसाइट पर जाने के लिए भी आमंत्रण देते हैं जहां आपको इस संगीत को सुनने के लिए लिंक मिलेंगे। इंडियाना के रॉक सितारे जॉन मेलनकैंप का आलेख ''छोटा शहर, नामी डिज़ाइन,'' जोसेफ हार्ट का आलेख ''छोटे कस्बे का आनंद,'' अमेरिका में ग्रामीण जीवन की ओर लौटने के उस रुझान को अभिव्यक्त करते हैं जहां शहरों के लोग छोटे कस्बों और ग्रामीण इलाकों में रहने जा रहे हैं। जॉन सेबास्तियन अपने आलेख ''किसान बाज़ार'' में शहरी क्षेत्रों में चल रही ''गांवों की ओर वापसी, ज़्यादा विशुद्धता की ओर वापसी'' की मुहिम के बारे में बता रहे हैं। नीना एलिस अपने आलेख ''एक कमरे वाले स्कूल'' में बता रही हैं कि ये अमेरिकी विरासत का हिस्सा हैं और भारत की ही तरह अमेरिका के गांवों में अभी भी चल रहे हैं।

हमारे आलेखों का दूसरा समूह स्वास्थ्य संबंधी सामग्री का है। अमेरिकियों और भारतीयों, दोनों की ही इसमें समान दिलचस्पी है। ''हल्दी बनी औषधि'' में गैरी स्टिक्स भारत के हल्दी के पौधे के औषधीय गुणों पर हो रहे शोध के बारे में बता रहे हैं। इसी तरह के एक अनूठे शोध के बूते डॉ. जोनास साक ने पोलियो का टीका विकसित किया और इस बीमारी से बच्चों के अपंग होने और मौत के मुंह में जाने के अमेरिकियों के डर को खत्म किया। लीज़ा ए. स्वेनास्र्की डि हरेरा बता रही हैं कि यह सफलता कैसे मिली और इस वास्तविक उम्मीद से परिचय करा रही हैं कि भारत भी इस बीमारी से मुक्त हो सकता है।

हम दो लोगों के व्यक्तिगत अनुभव भी आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्होंने बीमारी से मुकाबला किया और अन्य लोगों की मदद के लिए प्रतिबद्ध हैं: भारत में अमेरिकी राजदूत की पत्नी जीनी मल्फ़र्ड बता रही हैं कि कैसे स्तन कैंसर का जल्दी पता लगने के कारण वह अपनी ज़िंदगी बचा पाईं, जबकि उर्दू स्पैन के संपादक अंजुम नईम याद कर रहे हैं कि कैसे वह बचपन में पोलियो के शिकार हो गए क्योंकि उनके माता-पिता को इससे बचने के टीके के बारे में पता नहीं था।

शुभकामनाएं।